भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४६, मई-२०२५

पहलगाम की हवा

www.bhartiyaparampara.com

For Private Circulation Only

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-४, अंक-४६, मई-२०२५

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत-२०८२, अयान-उत्तरायण, ऋतु-ग्रीष्म

सोम		05 बैशाख शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी	12 बैशाख शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, बुद्ध पूर्णिमा	19 ज्येष्ठ कृ. सप्तमी	26 ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी/अमावस्या, मासिक शिवरात्री
मंगल		06 बैशाख शु. नवमी	13 ज्येष्ठ कृ. प्रतिपदा, नारद जंयती	20 ज्येष्ठ कृ. अष्टमी,मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	27 ज्येष्ठ कृ. अमावस्या, शनि जंयती, वट सावित्री व्रत
बुध		07 बैशाख शु. दशमी	14 ज्येष्ठ कृ. द्वितीया	21 ज्येष्ठ कृ. नवमी	28 ज्येष्ठ शु. प्रतिपदा
गुरू	01 बैशाख शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी, अंत. श्रमिक दिवस	08 बैशाख शु. एकादशी, मोहिनी एकादशी व्रत	15 ज्येष्ठ कृ. तृतीया	22 ज्येष्ठ कृ. दशमी	29 बैशाख शु. तृतीया, महाराणा प्रताप जंयती
शुक्र	02 बैशाख शु. पंचमी, सूरदास, शंकराचार्य, रामानुज जंयती	09 बैशाख शु. द्वादशी	16 ज्येष्ठ कृ. चतुर्थी, एकदंत संकष्टी चतुर्थी	23 ज्येष्ठ कृ. एकादशी, अपरा एकादशी व्रत	30 बैशाख शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी
शनि	03 बैशाख शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	10 बैशाख शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	17 ज्येष्ठ कृ. पंचमी	24 ज्येष्ठ कृ. द्वादशी	31 बैशाख शु. पंचमी, विश्व तम्बाकु निषेध दिवस
रवि	04 बैशाख शु. सप्तमी, गंगा सप्तमी	11 बैशाख शु. चतुर्दशी, मातृ दिवस, नृसिंह जंयती	18 ज्येष्ठ कृ. पंचमी	25 ज्येष्ठ कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

पहलगाम की गोलियाँ: धर्म पर नहीं, मानवता पर चली थीं

कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुआ आतंकी हमला सिर्फ एक गोलीबारी नहीं थी—यह एक ऐसा खौफनाक संदेश था जिसमें गोलियों ने धर्म की पहचान पूछकर चलना शुरू किया। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो आतंकियों ने पहले पर्यटकों से उनका धर्म पूछा, फिर उन्हें जबरन कलमा पढ़ने के लिए कहा, और इंकार करने पर गोली मार दी। यह न केवल एक घृणित धार्मिक कट्टरता का प्रदर्शन था, बल्कि एक सुनियोजित राजनीतिक षड्यंत्र भी था, जिसका उद्देश्य कश्मीर में पुनः स्थापित होती शांति और विश्वास को तार-तार करना था।

धर्म के नाम पर किया गया अमानवीय अपराध

जब किसी को गोली मारने से पहले उसका धर्म पूछा जाता है, तो यह न केवल उस व्यक्ति की जान का अपमान है, बल्कि उस पूरे समाज का अपमान है जो **'सर्व धर्म समभाव'** की बात करता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आतंकियों ने पहले **'हिंदू'** पहचान की पुष्टि की, फिर **'गोली'** को धर्म की रेखा पर खड़ा कर दिया। इससे बड़ा पाखंड क्या होगा कि **किसी भी धर्म की आड़ में आतंक फैलाया जाए, जबकि हर धर्म की जड़ में 'मानवता' बसती है।**

इस हमले ने यह साबित कर दिया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन आतंकवादी अक्सर धर्म को ढाल बनाकर उसे इस्तेमाल करते हैं। जबरन किसी से कलमा पढ़वाना और न मानने पर जान ले लेना, यह इस्लाम के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है। **पैग़ंबर मोहम्मद ने तो मक्का में भी अपने दुश्मनों को माफ किया था**—यहाँ तो बेगुनाह पर्यटकों पर गोली चलाई गई।

साजिश सिर्फ जान लेने की नहीं, छवि बिगाड़ने की भी

यह हमला न केवल मानवता पर था, बल्कि भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि पर भी हमला था।

पहलगाम, जो **'मिनी स्विटजरलैंड'** के नाम से जाना जाता है, वहाँ इस तरह की घटना का होना वैश्विक स्तर पर कश्मीर को फिर एक बार **'संवेदनशील और अस्थिर'** क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। पिछले कुछ वर्षों में कश्मीर में पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी—लोगों ने धीरे-धीरे डर के माहौल से बाहर निकलना शुरू किया था। लेकिन यह हमला उस विश्वास को तोड़ने की कोशिश है। **पर्यटकों की वापसी का मतलब था स्थानीय लोगों की आजीविका का पुनर्जन्म।** कश्मीरी दुकानदार, टैक्सी चालक, होटल कर्मचारी—सभी इस बढ़ते पर्यटन पर निर्भर थे। लेकिन अब, एक बार फिर सैकड़ों पर्यटक कश्मीर छोड़ने लगे हैं। कई बुकिंग्स रद्द हो रही हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान होगा।

'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (TRF), जो कि लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा संगठन माना जाता है, ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। सूत्रों का कहना है कि यह हमला पाकिस्तान से संचालित हो सकता है। यदि यह सच है, तो यह स्पष्ट संकेत है कि यह केवल एक धार्मिक हिंसा नहीं थी, बल्कि भारत की आंतरिक शांति को अस्थिर करने की अंतरराष्ट्रीय साजिश भी थी।

राजनीति की परछाई: इस हमले के असली मकसद

यह हमला ऐसे समय में हुआ है जब भारत चुनावों की तैयारी में जुटा है। क्या यह हमला लोकतंत्र में भय और अविश्वास फैलाने की रणनीति नहीं हो सकती? क्या यह आतंकी ताकतों का एक संकेत नहीं है कि वे अब भी धार्मिक भावनाओं को भड़काकर भारत को अस्थिर कर सकते हैं?

पीड़िता की आँखों से देखें—राजनीति नहीं, पीड़ा दिखती है

इस हमले में मारे गए पर्यटक की पत्नी के बयान ने पूरे देश को हिला दिया—**"मैंने उसे मरते देखा, लेकिन कुछ नहीं कर सकी।"** यह वाक्य किसी भी भाषण या नारे से कहीं ज्यादा असरदार है। एक महिला की चीख, एक बच्चे का रोना, एक पर्यटक का डर—ये किसी चुनावी भाषण या न्यूज़ चैनल की बहस से नहीं मिटते। यह हमला न केवल गोली से मारे गए व्यक्ति का अंत था, बल्कि एक पूरे परिवार की स्थिरता का अंत था। यह उस महिला की नींद का अंत था, जो अब शायद जिंदगी भर अपने पति की लाश की छवि नहीं भूल पाएगी। और **यह उस भरोसे का अंत था, जो उसने भारत की सुरक्षा पर किया था।**

क्या भारत सरकार ने पर्याप्त कदम उठाए?

सरकार की ओर से इस हमले की निंदा की गई और सुरक्षा बलों को सतर्क किया गया। परंतु सवाल यह उठता है कि क्या निंदा पर्याप्त है? क्या हम उस स्तर पर इंटेलिजेंस नेटवर्क खड़ा कर पाए हैं कि ऐसे हमलों को रोका जा सके? **कश्मीर में बार-बार 'अस्थिरता के बाद स्थिरता और फिर आतंक' का यह चक्र कब टूटेगा?**

कश्मीरी मुसलमानों की भी चुप्पी नहीं, चिंता दिखी

यह ध्यान देने योग्य है कि कश्मीरी समाज के कई मुसलमानों ने इस घटना की खुलकर निंदा की। कुछ स्थानीय व्यापारियों ने पर्यटकों को सुरक्षित बाहर निकलने में मदद की। इससे स्पष्ट होता है कि आतंकवाद को समर्थन स्थानीय नहीं, बाहरी है। कट्टरता कश्मीर की मिट्टी से नहीं, बाहर से आयात होती है।

अब आगे क्या? हम सबको सोचना होगा कि ऐसे मामलों में केवल गुस्सा जाहिर करना काफी नहीं है। हमें नीतियों में बदलाव चाहिए। कश्मीर में स्थायी शांति तभी संभव है जब:

- धार्मिक शिक्षा में सहिष्णुता को प्राथमिकता दी जाए।
- स्थानीय युवाओं को रोजगार और भविष्य का भरोसा मिले।
- कट्टरता के प्रचार पर तकनीकी सेंसरशिप लगे।
- आतंकी नेटवर्क को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से अलग-थलग किया जाए।

निष्कर्ष: यह लड़ाई 'धर्म' की नहीं, 'मानवता' की है।

इस लेख के माध्यम से मैं एक सवाल छोड़ना चाहती **हूँ—क्या हम इतने असहाय हो गए हैं कि किसी का धर्म पूछकर उसे मारने वालों को केवल 'आतंकी' कहकर छोड़ दें?** यह समय है जब हमें मिलकर कहना होगा कि जो धर्म के नाम पर जान ले, वह किसी धर्म का अनुयायी हो ही नहीं सकता। यह हमला केवल एक पर्यटक की हत्या नहीं है, यह हमारी आत्मा पर हमला है। हमें इस चुप्पी को तोड़ना होगा। हमें न केवल आतंकी संगठन TRF से सवाल करना चाहिए, बल्कि उन शक्तियों से भी जो इन्हें पनाह देती हैं, और उन राजनीतिक दलों से भी जो इस दुख का इस्तेमाल अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए करते हैं।

पहलगाम की घाटियों में बहती नदियों का पानी अब पहले जैसा नहीं रहा—वहाँ अब एक सवाल तैरता है: "कब तक धर्म की पहचान मौत का पैमाना बनी रहेगी?

- प्रियंका सौरभ जी, हरियाणा

"अभी तो मेंहदी सूखी भी न थी"

अभी तो हाथों से उसका मेंहदी का रंग भी नहीं छूटा था,
कलाईयों में छनकती चूड़ियाँ नई थीं,
सपनों की गठरी बाँध वो चल पड़ा था वादियों में,
सोचा था — एक सफर होगा, यादों में बस जाने वाला।

पर तुम आए — नाम पूछा, धर्म देखा, गोली चलाई!
सर में... जहाँ शायद अभी भी हँसी के कुछ अंश बचे होंगे।

रे कायरों! तुम क्या जानो मोहब्बत की बोली?
तुम्हें दो गज ज़मीन भी न मिले,
जो ज़िन्दगी के गीत को मातम में बदल दो।

वो राजस्थान से आया था,
हिन्दू था, इंसान भी था — पर तुम्हारी सोच इतनी छोटी थी,
कि नाम ही उसकी सज़ा बन गया।

वो तस्वीर... जहाँ पत्नी पति के शव को निहार रही है —
न आँसू बहे, न चीख निकली,
सिर्फ एक मौन जिसने पूरी मानवता को जगा दिया।

क्या कोई कभी सोच सकता है — कि हनीमून ट्रिप की तस्वीरें,
कफन के साथ आएंगी?

- प्रियंका सौरभ जी, हरियाणा

श्रम बिकता है, बोलो ..... खरीदोगे..? (ऐसा बाजार जहां रोज लगता है मेहनतकशों का मेला)

भारत में जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है उतनी ही गति से बेरोजगारी भी बढ़ी है। हालात ऐसे बदतर हैं कि डिग्रीधारी युवकों को चपरासी तक की नौकरी भी नसीब नहीं हो पा रहीं है तथा भारत में शिक्षित बेरोजगारी अपने चरमोत्कर्ष पर है। पिता को अपने बेटे की चिंता है कि मेरे बाद इसका क्या होगा। पिता अपने बेटे को लेकर नौकरी की तलाश में दर-दर भटकता है। इस उम्मीद पर कि उसके बेटे को चपरासी की भी नौकरी मिल जाए तो वह चैन की सांस ले सके। **हाथों में डिग्रियां एवं आंखों में दिवास्वप्न लिए युवक दर - दर भटक रहे हैं, किंतु उन्हें हर जगह यही बोर्ड टंगा मिलता है, "नौ वेकेंसी"। आखिर जाएं तो जाएं कहां ?**

इलेक्ट्रॉनिक व कम्प्यूटराइजेशन क्रांति ने मानव मशीन की उपयोगिता को कमतर बना दिया है। यही कारण है कि अधिकांशतः शासकीय विभागों में कर्मचारियों की छंटनी के उपाय किए जा रहे हैं व कई शासकीय, अर्द्ध शासकीय विभागों में कर्मचारियों की भर्ती पर रोक लगी हुई है या नाममात्र की वेकेंसी निकल रहीं हैं। वर्तमान समय में आईटी कंपनियाँ भी लगभग पचास प्रतिशत कर्मचारियों की छंटनी कर रही है। हालात ऐसे बन गए हैं कि माता-पिता को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता सताने लगी है।

आस्था के जन्म लेते ही हम भारतीय हो गए एक अरब पार और अब 140 करोड़। समस्याएं दिन- पर - दिन बढ़ती ही जा रही हैं। समाज का एक तबका ऐसा है जो आज भी असहाय है तथा वह शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, रोटी व अन्य मूलभूत जरूरतों से वंचित ही है। कुछ लोग इतने बदनसीब भी हैं जिन्हें किसी-किसी दिन रोटी तक नसीब नहीं होती है व फाकामस्ती में ही दिन गुजारने पड़ते हैं। हाथों को रोजगार नहीं, बदन को कपड़ा नहीं और रहने को घर नहीं।

श्रम बिकता है, बोलो ... खरीदोगे..?

महानगरी इंदौर में चंदन नगर, संगम नगर,

मालवा मिल, गुमास्ता नगर, फूटी कोठी, जूनी इंदौर, रेती मंडी चौराहा, नवलखा चौराहे सहित 20 से 25 ऐसे स्थान है जो मजदूर चौक के रूप में जाने जाते हैं।

जहाँ रोजगार की तलाश में मेहनतकशों का रोज अलसुबह मेला लगता है। इनकी आंखों में सपने होते हैं, पेट में भूख और हाथों में रोटी। ये मजदूर रोजगार हेतु बड़ी तादाद में यहां इकट्ठा होते हैं। इन मजदूरों में बच्चे, युवक - युवतियां व बूढ़े भी शामिल होते हैं। इनमें 13-14 वर्ष के बच्चे से लेकर 60-65 वर्ष तक के वृद्ध भी होते हैं। जरूरतमंद लोग यहां आते है, सौदा करते हैं व इन्हें अपने साथ ले जाते हैं। ये मजदूर प्रतिदिन 400 से लेकर 500 रूपए तक कमा लेते हैं।

बस... इन्हें 10 घंटे कोल्हू के बैल की तरह जुतना पड़ता है। इनमें से कई लोग ऐसे भी होते है **जिन्हें किसी दिन कोई खरीदने नहीं आता है, उस रोज वे भूखों तक मरते हैं व फाकामस्ती में ही दिन गुजारना पड़ता हैं और उस दिन माँ बच्चों की तसल्ली के लिए चूल्हे पर खाली डेचकी में सिर्फ़ पानी पकाती है।** ये लोग साल में 365 दिन ही ईमानदारी, मेहनत व लगन से काम करते हैं और इन्हें कोई साप्ताहिक अवकाश भी नहीं मिलता है। फिर भी ये हर हाल खुश है।

ये नींद की आगोश में नीले गगन के तले थककर चूर बेफिक्र हो सो जाते हैं व भोर भए नीरव पंछियों के चहचहाते ही आंख मलकर फिर निकल पड़ते हैं अपने लक्ष्य की ओर रोजगार की तलाश में।

पथराई आंखों में एक स्वप्न है कि रोज-ब-रोज काम ढूंढ़ने की यातना से कभी तो मुक्ति मिलेगी। इसका उत्तर शायद किसी के पास नहीं है? न हमारे पास, न प्रशासन के पास और न ही सरकार के पास।

मेहनतकशों से एक बात कहना है, पढ़ना लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालों ...।

ये दिल वालों की है दुनिया।
साहस वालों की है दुनिया ॥
अपनी किस्मत खुद ही लिख दें।
हिम्मत वालों की है दुनिया ॥
खोल दें अपने पंख पखेरू।
ये पर वालों की है दुनिया ॥
चल कर लें दुनिया मुट्ठी में।
पढ़ने वालों की है दुनिया ॥
उगा लें हथेली पर सूरज।
सपने वालों की है दुनिया ॥

- नलिन खोईवाल जी, इंदौर (मध्यप्रदेश)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

बुद्ध पूर्णिमा, जिसे **"वैशाख पूर्णिमा"** भी कहा जाता है, भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का एक अत्यंत पावन पर्व है। यह दिन भगवान **गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति (बोधि) और महापरिनिर्वाण – तीनों घटनाओं की स्मृति में मनाया जाता है।** यह पर्व वैशाख माह की पूर्णिमा को आता है, जो आमतौर पर अप्रैल या मई महीने में होता है।

भारतीय परंपरा में बुद्ध न केवल एक महान संत हैं, बल्कि उन्हें एक अवतार के रूप में भी देखा जाता है। श्रीमद्भागवत एवं अन्य पुराणों में भगवान विष्णु के दस अवतारों में बुद्ध का भी उल्लेख है। उनका जीवन त्याग, अहिंसा, करुणा और आत्मबोध का प्रतीक है। **भगवान बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ था।**

राजकुमार सिद्धार्थ ने सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन को त्यागकर सत्य और मुक्ति की खोज में तपस्या का मार्ग अपनाया। बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे **'बुद्ध'** कहलाए – अर्थात **'जाग्रत आत्मा'**।

बुद्ध पूर्णिमा पर भारतवर्ष में विशेष पूजा, ध्यान, सत्संग और दान का महत्व है। बौद्ध विहारों और मंदिरों में इस दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। **अनुयायी बुद्ध वचनों का पाठ करते हैं, धम्मचक्र प्रवर्तन की स्मृति में प्रवचन होते हैं,** और दीप जलाकर करुणा का प्रकाश फैलाया जाता है। इस दिन उपवास, सेवा, और अहिंसा का विशेष पालन किया जाता है। बुद्ध का संदेश **"अप्प दीपो भव"** – स्वयं दीपक बनो, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने जीवन के दुःखों को समझने और उनसे मुक्ति पाने का जो मार्ग बताया– अष्टांगिक मार्ग, वह मानवता को शांति और संतुलन की ओर ले जाने वाला पथ है।

बुद्ध पूर्णिमा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्म निरीक्षण और आंतरिक शांति की ओर बढ़ने का एक अवसर है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि **सच्चा ज्ञान और करुणा ही मानव जीवन को सार्थक बनाते हैं।**

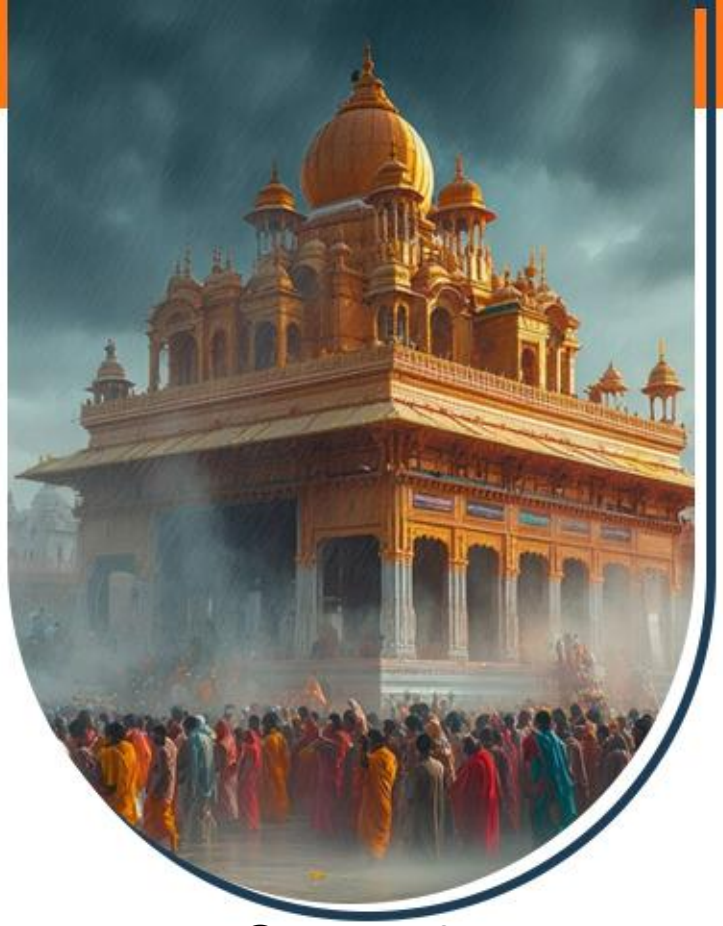

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से पूर्व लगभग 272 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गोरखपुर नगर आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। गोरखपुर छठी शताब्दी ईसा पूर्व सोलह महाजनपदों में से एक अंग था। माना जाता है कि चन्द्र वंश ने इस क्षेत्र पर शासन किया था, जिसमें राजा बृहद्रथ भी सम्मिलित थे। गोरखपुर मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त और हर्ष राजवंशों के तत्कालीन साम्राज्यों का एक अभिन्न अंग था।

प्राचीन समय में गोरखपुर के भौगोलिक क्षेत्र में बस्ती, देवरिया, कुशीनगर, आजमगढ़ आदि आधुनिक जनपद सम्मिलित थे। वैदिक अभिलेखों के अनुसार, अयोध्या के सत्तारूढ़ ज्ञात सम्राट इक्ष्वाकु, जो सौर राजवंश के संस्थापक थे, जिनके वंश में उत्पन्न सूर्यवंशी में रामायण के राम को सभी लोग जानते हैं, पूरे क्षेत्र में अति प्राचीन आर्य संस्कृति और सभ्यता के प्रमुख केंद्र कोशल और मल्ल, जो सोलह महाजनपदों में दो प्रसिद्ध राज्य ईसा पूर्व छठी शताब्दी में विद्यमान थे। यह उन्हीं राज्यों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र हुआ करता था। इसका नाम कई बार बदला, जैसे रामग्राम, पिप्पलिवन, गोरक्षपुर, अख्तनगर आदि। वर्ष 1801 में ब्रिटिश इंडिया कंपनी ने अवध के नवाब से गोरखपुर के अधिकार प्राप्त किए और तब इसका नाम गोरखपुर रखा।

भगवान बुद्ध से संबंधित पवित्र स्थल –

गोरखपुर में राप्ती और रोहिणी नदियों का संगम होता है। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में गौतम बुद्ध ने सत्य की खोज के लिए जाने से पहले अपने राजसी वस्त्र यहीं रोहिणी के तट पर त्याग दिए थे और सत्य की खोज में निकल पड़े थे।

भगवान महावीर का भी रहा जुड़ाव –

यह नगर समकालीन 24 वें जैन तीर्थंकर भगवान महावीर की यात्रा के साथ जुड़ा हुआ है। भगवान महावीर की जन्मस्थली गोरखपुर से बहुत दूर नहीं है। बाद में उन्होंने पावापुरी में अपने मामा के महल में महानिर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया था। यह पावापुरी कुशीनगर से 15 कि.मी. की दूरी पर है।

हिन्दू संत गोरक्षनाथ के नाम पर गोरखपुर - मध्यकालीन समय में, इस शहर को मध्यकालीन हिन्दू संत गोरक्षनाथ के नाम पर गोरखपुर दिया गया था। यद्यपि गोरक्षनाथ की जन्म तिथि अभी तक स्पष्ट नहीं है, तथापि जनश्रुति यह भी है कि महाभारत काल में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का निमंत्रण देने उनके छोटे भाई भीम स्वयं यहाँ आए थे। चूँकि गोरक्षनाथ उस समय समाधिस्थ थे, अतः भीम ने कई दिनों तक विश्राम किया था। उनकी विशालकाय लेटी हुई प्रतिमा आज भी प्रति वर्ष तीर्थयात्रियों की एक बड़ी संख्या को अपनी ओर आकर्षित करती है।

गोरखनाथ मंदिर -

गोरखनाथ मंदिर नाथ संप्रदाय का प्रमुख केंद्र है। हिन्दू धर्म, दर्शन, अध्यात्म और साधना के अंतर्गत विभिन्न सम्प्रदायों और मत - मतांतरों में 'नाथ सम्प्रदाय 'का प्रमुख स्थान है। सम्पूर्ण देश में फैले नाथ सम्प्रदाय के विभिन्न मंदिरों तथा मठों की देखरेख यहाँ से होती है। नाथ सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार सच्चिदानंद शिव के साक्षात् स्वरूप **'श्री गोरक्षनाथ जी 'त्रेतायुग में गोरखपुर,** उत्तर प्रदेश और कलयुग में गोरखमधी, सौराष्ट्र में आविर्भूत हुए थे। चारों युगों में विद्यमान एक अयोनिज अमर महायोगी. सिद्ध महापुरुष के रूप में दक्षिण के एशिया के विशाल भूखण्ड तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपने योग से कृतार्थ किया।

गोरखनाथ मंदिर का निर्माण -

गोरक्षनाथ मंदिर गोरखपुर में अनवरत योग साधना का क्रम प्राचीनकाल से चलता रहा है। ज्वालादेवी के स्थान से परिभ्रमण करते हुए गोरक्षनाथ जी ने भगवती राप्ती के तटवर्ती क्षेत्र में तपस्या की थी और उसी स्थान पर अपनी दिव्य समाधि लगाई थी, जहाँ वर्तमान में 'श्री गोरक्षनाथ मंदिर स्थित है। महायोगी गुरु गोरखनाथ की यह तपस्याभूमि प्रारम्भ में एक तपोवन रूप में रही होगी और जनशून्य शांत तपोवन में योगियों के निवास के लिए कुछ छोटे-छोटे मठ रहे,मंदिर का निर्माण बाद में हुआ। आज हम जिस विशाल और भव्य मंदिर का दर्शन कर हर्ष और शांति का अनुभव करते हैं, यह ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज जी की ही कृपा से है। महंत अवैद्यनाथ जी महाराज के संरक्षण में श्रीगोरखनाथ मंदिर की भव्यता. विशाल आकार-प्रकार, प्रांगण की भव्यता तथा पवित्र रमणीयता को प्राप्त हुआ। पुराना मंदिर नव निर्माण की विशालता और व्यापकता में समाहित हो गया है।

वर्तमान संत एवं योगी आदित्यनाथ (मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश) संत गोरखनाथ के सिद्धान्तों के अनुसार नाथ सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर हैं, जिनको 14 सितंबर, 2014 को

महंत नियुक्त किया गया है। कहा जाता है कि गोरखनाथ मंदिर में संत गोरखनाथ जी की समाधि और गद्दी (प्रार्थना स्थल) हैं। यहाँ मकर संक्रांति के अवसर पर हजारों श्रद्धालु आते हैं और एक माह तक चलने वाले विशाल **'खिचड़ी मेला** 'में गोरखनाथ बाबा को खिचड़ी चढ़ाते हैं।

अखण्ड ज्योति -

मुस्लिम शासन में हिन्दुओं और बौद्धों के अन्य सांस्कृतिक केन्द्रों की भाँति इस पीठ को भी कई बार क्षति पहुँचाई गई। विक्रमी चौदहवीं सदी में भारत के मुस्लिम सम्राट अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में यह मठ नष्ट किया गया और साधक योगी बलपूर्वक निष्कासित किए गए थे। विक्रमी संवत सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण मुगल शासक औरंगजेब ने इसे दो बार नष्ट किया. परन्तु शिव गोरक्ष द्वारा त्रेता युग में में जलाई गई अखण्ड ज्योति आज तक अखण्ड रूप में जलती हुई आध्यात्मिक-धार्मिक आलोक से ऊर्जा प्रदान कर रही हैं। यह अखण्ड ज्योति श्रीगोरखनाथ मंदिर के अंतरवर्ती भाग में स्थित है।

सामाजिक समरसता का प्रतीक है गोरखनाथ मंदिर -

गोरखनाथ मंदिर की सामाजिक समरसता समरसता विश्व समुदाय के लिए एक अद्वितीय उदाहरण है। ऊँच-नीच, छुआछूत और कुरीतियों के विरुद्ध समाज को जगाने में यह पंथ अग्रणी भूमिका निभाता है। पंथ के लिए हिन्दू और मुसलमान में कोई भेद नहीं है। इस संप्रदाय के साधक अपने नाम के आगे नाथ शब्द जोड़ते हैं। **"कान छिदवाने के कारण उन्हें कनफटा, दर्शन कुण्डल धारण करने के कारण दरशनी और गोरखनाथ के अनुयायी होने के कारण गोरखनाथी भी कहा जा सकता है।"**

मंदिर परिसर में पीढ़ियों से रहते हैं मुस्लिम परिवार भी मंदिर परिसर साम्प्रदायिक सद्भावना का केन्द्र है। यहाँ कई मुस्लिम परिवार पीढ़ियों से रहते हैं और वे विभिन्न तरह के व्यवसाय का जीविकोपार्जन करते हैं। वे मंदिर की व्यवस्था में रचे - बसे हैं। मंदिर के चारों ओर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की बस्ती है।

मंदिर की दीवारों पर लिखी ये पंक्तियाँ एक बार आश्वस्त करती हैं कि सामाजिक-साम्प्रदायिक समरसता का नाथ सम्प्रदाय का ध्येय सुस्थिर रहेगा -

'हिन्दू ध्याये देहुरा, मुसलमान मसीत। जोगी ध्यावे परमपद, जहाँ देहुरा न मसीत। '

अर्थात योगी मंदिर - मस्जिद का ध्यान नहीं करता, वह परमपद का ध्यान करता है, यह

परमपद क्या है?? कहाँ है? यह परमपद तुम्हारे भीतर है। इसके अतिरिक्त यहाँ विष्णु मंदिर, गीता वाटिका, चौरी-चौरा स्मारक, नक्षत्रशाला, वाटर पार्क, नीर निकुंज, इंदिरा बाल विहार, प्रेमचंद पार्क. नेहरू मनोरंजन केन्द्र, रेल संग्रहालय, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क आदि अनेक दर्शनीय स्थान हैं, जो तीर्थयात्रियों को सहज ही आकर्षित करते हैं, उनमें से कुछ अन्य निम्नवत हैं -

तरकुलहा देवी

तरकुलहा देवी मंदिर गोरखपुर से 20 किलोमीटर की दूरी पर तथा चौरी-चौरा से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह हिन्दू भक्तों के लिए प्रमुख धार्मिक स्थल है।

मंदिर से जुड़ा क्रांतिकारी बाबू बंधू का इतिहास -

सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पहले यहाँ क्षेत्र में जंगल हुआ करता था। इस जंगल में डुमरी रियासत के बाबू बंधू सिंह रहते थे। वे बचपन से ही गोर्रा नदी के किनारे ताड़ के पेड़ के नीचे पिंडियां स्थापित कर देवी की पूजा किया करते थे। तरकुलहा देवी बाबू बंधू सिंह की इष्ट देवी थीं। जब वे बड़े हुए, तो भारतीयों के ऊपर अँग्रेजों के अत्याचार की कहानियाँ सुनकर, उनका खून खौल उठता था। बंधू सिंह गोरिल्ला युध्द में कुशल थे। इसलिए जब भी कोई अँग्रेज उस जंगल से गुजरता, बंधू सिंह उसको मारकर उसका सिर देवी माँ के चरणों में समर्पित कर देते। क्षेत्र के एक व्यवसायी की मुखबिरी के चलते बंधू सिंह अँग्रेजों के हत्थे चढ़ गए। अँग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर अदालत में प्रस्तुत किया गया. जहाँ उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। 12 अगस्त, 1857 को गोरखपुर में अलीनगर चौराहा पर सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटकाया गया। अमर शहीद बंधू सिंह को सम्मानित करने के लिए यहाँ एक स्मारक बना है।

आरोग्य मंदिर -

आरोग्य मंदिर शरीर के प्राकृतिक रूप से चिकित्सा संबंधी उपचारों के लिए काफी प्रसिद्ध है। गोरखपुर के उत्तर में मेडिकल कालेज रोड पर स्थित इस संस्थान में शहर के किसी भी स्थान से सुगमता से पहुँचा जा सकता है। यहाँ पर लोगों को मेडिटेशन और नेचुरल हीलिंग के तरीके सिखाए जाते हैं। पर्यटक यहाँ स्वास्थ्य लाभ के लिए पूरे वर्ष आते हैं।

गोरखपुर के औरंगाबाद का टेराकोटा विदेशों तक प्रसिद्ध -

गोरखपुर से उत्तर में बसे ग्राम औरंगाबाद का टेराकोटा व्यवसाय, जैसे मिट्टी के बर्तन, खिलौने तथा कलाकृतियों की धूम देश ही नहीं, अपितु विदेशों में भी है।

यहाँ आने वाले तीर्थयात्री परम्परागत शिल्प - कला के नमूनों को देखकर चमत्कृत हो उठते हैं और वे भारत की गौरव - गरिमा से अभिभूत होते हैं।

गीता प्रेस -

गोरखपुर का गीता प्रेस बहुत पुराना विश्व स्तरीय प्रकाशन है। यह जाना-माना प्रतिष्ठान विगत कई वर्षों से धर्म और अध्यात्म का प्रकाश फैला रहा है। भारतीय संस्कृति एवं विदेश में अपनी अलग पहचान बनाए रखने में सफल है। यहाँ सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक साहित्य की पुस्तकें बड़े स्तर पर प्रकाशित होती हैंयहीं से प्रकाशित 'कल्याण 'नामक आध्यात्मिक मासिक पत्रिका अपने प्रकाशन के लगभग 100 वर्ष पूर्ण कर रही है। इसका बड़ी संख्या में प्रकाशन होता है, जिसका मूल्य अत्यल्प है। इसमें विज्ञापन प्रकाशित नहीं होते हैं।

रामगढ़ ताल इसका मूल नाम रामग्राम था।

यह पूर्वांचल का मरीन ड्राइव बन चुका है। यहाँ लाइट एंड साउंड शो के साथ सायं को अद्भुत दृश्य होता है।

कुसुम्ही वन -

यह घना जंगल है। इस जंगल के बीच बुढ़िया माई का मंदिर है। इस मंदिर की ख्याति दूर-दूर तक फैली है। यहाँ प्रतिदिन श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या दर्शन के लिए पहुंचती है। यहाँ विनोद वन पार्क भी है।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय -

इसकी स्थापना 1987 में विविध तत्वों के संरक्षण के लिए की गई है। यहाँ पाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक की पुरातात्विक वस्तुएँ हैं। इसमें पत्थर की वस्तुएँ, कांस्य की मूर्तियाँ, धातु की वस्तुएँ. टेराकोटा के बर्तन, पाण्डुलिपियां, हाथी दांत, लघु चित्र, पुराने सिक्के आदि कई चीजें प्रदर्शित हैं।

गोरखपुर तीर्थयात्रियों के लिए महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ पहुँचने के लिए प्रायः सभी प्रमुख स्थानों से वायु मार्ग, रेल मार्ग तथा सड़क मार्ग से पर्याप्त सुविधा-संसाधन उपलब्ध हैं। यहाँ आने के लिए कभी भी योजना बनाई जा सकती है। माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अयोध्या, वाराणसी, नैमिषारण्य जैसे अनेक तीर्थ स्थलों के साथ गोरखपुर को भी विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है।

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर (लखनऊ)

कविता- परम्परा

मैं समय की संचित धरोहर,
युगों के ज्ञान और साधना का सार,
संस्कृति की लय में बहती,
संस्कारों की धूप में निखरती।

मैं विचारधाराओं का सेतु,
जो अतीत के अनुभव को
भविष्य की चेतना से जोड़ता है।
मैं शास्त्रों की गूढ़ व्याख्या,
और जीवन की सहज अनुभूति।

मैं केवल अनुष्ठानों की माला नहीं,
बल्कि जीवन दर्शन की धारा हूँ।
सुख-दुःख, धर्म-अधर्म,
नैतिकता और विवेक का संतुलन,
मनुष्य के मनोविज्ञान में बसी
एक अदृश्य परंतु जीवंत सत्ता हूँ।

मैं आदिम गुफाओं की चित्रकथा,
जो सभ्यता के पहले शब्द से जन्मी,
और आधुनिक विचारों के आँगन में
नए अर्थ खोजती रही।
मैं समय के साथ ढलती हूँ,
पर अपनी आत्मा नहीं खोती।

.....

न मैं रूढ़ियों का बंधन हूँ,
न परिवर्तन का अंधकार,
मैं सृजन की अनवरत प्रक्रिया हूँ,
जो पुरातन से नव्य की ओर
सार्थक सेतु बनाती है।

अतीत मेरा आधार है,
भविष्य मेरी खोज।
युगों का ज्ञान और साधना मेरा प्राण।

मैं परंपरा हूँ—मन और समाज का दर्पण,
जो समय के साथ गढ़ती है
नए मूल्य, नई दिशाएँ।

- **डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव जी,**
इंदौर (मध्यप्रदेश)

गंगा की कहानी सुनाती हूँ दोस्तों।
गंगा हुई प्रदूषित अब
क्या करेंगे लोग।
ऊंचे शिखर पर गंगा पावन पवित्र थी।
छूने को उसको लोगों में
लगती थी होड़ सी।
ऊँचे शिखर से उतरी
नीचे को जब चली।
गंगा पडा था नाम
नाम पावन पवित्र थी।
आगे बढ़ी मैदान में दुर्गत शुरू हुई।
कपड़े धोए साबुन से गंदगी आन पड़ी।
मानव बेखबर था तट सूखने लगे।
कृशकायं हुई गंगा
पतली सी धार थी।
हो जाओ सजग अब तो ना गंदगी करो।
सौगंध है तुम्हें
निर्मल सा फिर करो।
गंगा करेंगे निर्मल
पावन पवित्र हम।
जय-जय करेंगे गंगा
तरुवर रोपेंगे हम।

- अधिवक्ता ऊषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

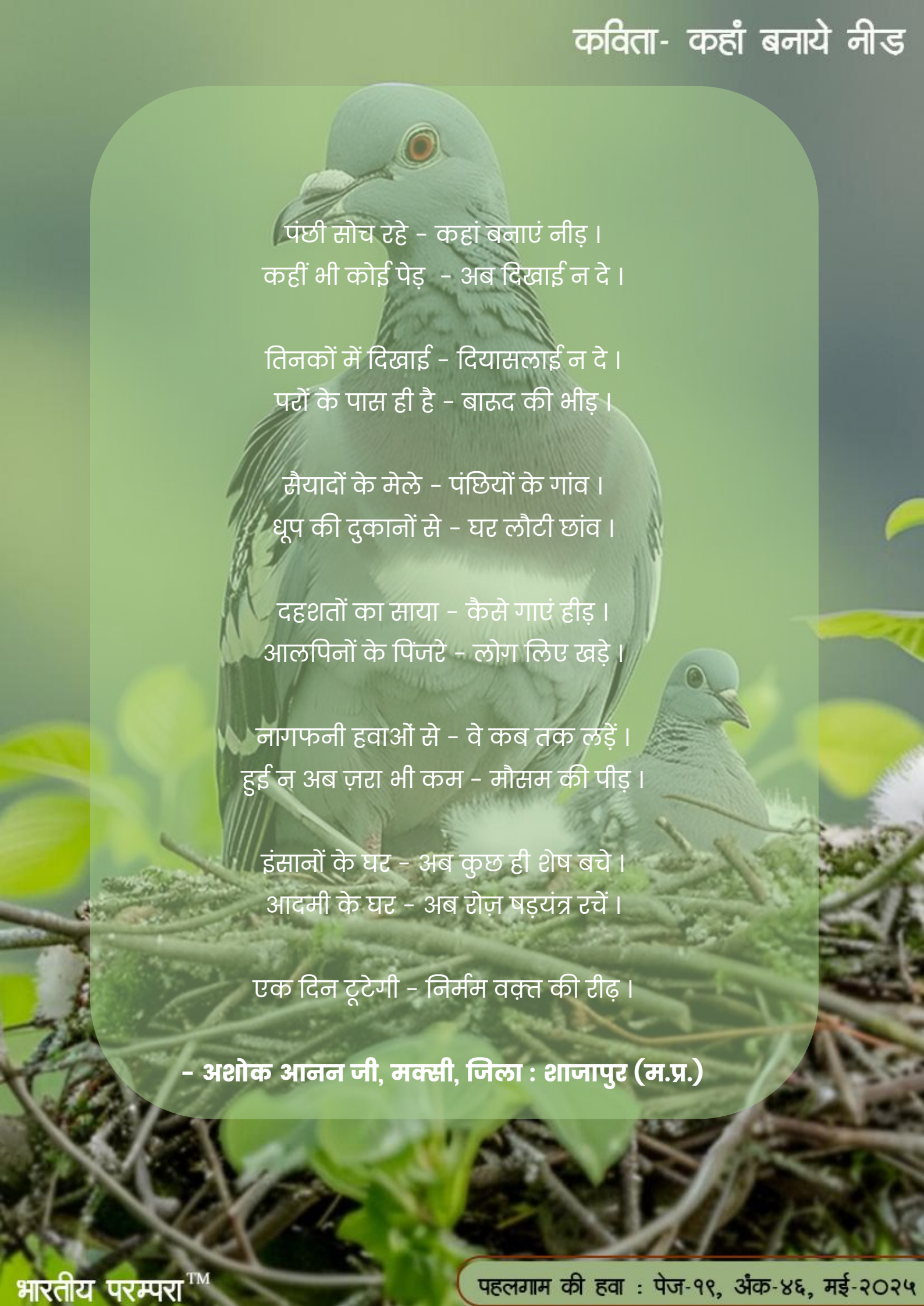

पंछी सोच रहे - कहां बनाएं नीड़ ।
कहीं भी कोई पेड़ - अब दिखाई न दे ।

तिनकों में दिखाई - दियासलाई न दे ।
परों के पास ही है - बारूद की भीड़ ।

सैयादों के मेले - पंछियों के गांव ।
धूप की दुकानों से - घर लौटी छांव ।

दहशतों का साया - कैसे गाएं हीड़ ।
आलपिनों के पिंजरे - लोग लिए खड़े ।

नागफनी हवाओं से - वे कब तक लड़ें ।
हुई न अब ज़रा भी कम - मौसम की पीड़ ।

इंसानों के घर - अब कुछ ही शेष बचे ।
आदमी के घर - अब रोज़ षड़यंत्र रचें ।

एक दिन टूटेगी - निर्मम वक़्त की रीढ़ ।

- अशोक आनन जी, मक्सी, जिला : शाजापुर (म.प्र.)

विषय - योगवासिष्ठ ग्रंथ की महिमा

श्री वाल्मीकि जी कहते हैं –

"मेरे शिष्यशिरोमणि, परम बुद्धिमान भरद्वाज! तुम भी इसी कमनीय तथा निर्मल ब्रह्मात्म दृष्टि का दृढ़तापूर्वक अवलंबन करके वीतराग, संदेहशून्य, शांतचित्त, जीवन्मुक्त होकर सुखपूर्वक रहो।

इस **'महा-रामायण'** के ज्ञान का आश्रय लेने से, यदि तुम्हारी बुद्धि आसक्तियों से रहित होकर घने मोहांधकार में भी पड़ जाए और तुम मूढ़ हो जाओ, तब भी वह नष्ट नहीं होगी।

आज मोक्षसंहिता को सुनकर तुम वास्तव में मुक्ततर और सर्वश्रेष्ठ जीवन्मुक्त हो गए हो।

इन पवित्र और ब्रह्म का प्रत्यक्ष अनुभव कराने वाले मोक्षोपायों को यदि कोई बालक भी श्रवण कर ले, तो वह तत्वज्ञानी हो सकता है। इसमें सत्यस्वरूप ब्रह्म का निर्वचन होने के कारण यह मोक्षमयी उत्तम संहिता है।

ममतारूपी गांठें इस शास्त्र की कथाओं पर विचार करते रहने से सर्वथा खुल जाती हैं और मन एकरस अवस्था को प्राप्त हो जाता है।

जो लोग इन महामहिमाशाली मोक्षोपायों का ज्ञान प्राप्त करेंगे, वे तत्ववेताओं में श्रेष्ठतम होकर फिर कभी संसार बंधन में नहीं पड़ेंगे।

जैसे पुण्यवान पुरुष धन-संपत्ति को पा लेता है, वैसे ही जो इसका सकाम भाव से पारायण करता है एवं दूसरों से पारायण कराता है, **वे पुरुष राजसूय यज्ञ के फल के समान फल प्राप्त कर बारम्बार स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं।** यदि वे निष्काम भाव से यह कार्य करेंगे, तो वे सद्शास्त्रों के सुयोग से मोक्ष प्राप्त कर लेंगे।

- महाबीर प्रसाद शर्मा जी, 'उत्सुक'
- वीरेन्द्र याज्ञिक जी
- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू'

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

ये क्या पोथी पुराण ले कर बैठे रहते हो जी। जब देखो पोस्ट करना फिर थोड़ी देर बाद फेसबुक में लाइक कमेंट्स देखना। क्या मिलता है समझ नहीं आता?

आज अनुराधा सुबह–सुबह अपने पति मनोरम से तीखी आवाज़ में बोली।

मनोरम ने पूछा– **तुम्हें क्या हो गया है अनु? आज पारा सूरज की तरह गर्म क्यों लग रहा है?**

तभी अनुराधा बोली– हमारे कॉलोनी के सभी लोग बोलते हैं मुझे; तुम्हारे पतिदेव दिन भर पोस्ट करते रहते हैं और मोबाइल में घुसे रहते हैं। न जाने मेरे पीठ पीछे कितना रायता फैला रहे होंगे; पता चले तो समेटना मुश्किल हो जाएगा।

अच्छा! तो तुम ये क्यों नहीं बोलती कि वे एक साहित्यकार हैं, कविता–कहानियाँ लिखते हैं। मनोरम अनुराधा को बड़े ही सहजता से बोला।

अच्छा! अपने आप को बहुत बड़े साहित्यकार मानते हैं; ये भी कोई शौक़ है भला! मुंह बनाती हुई अनुराधा बोली।

बिल्कुल! क्यों नहीं। विश्व में ऐसी कोई भी जगह नहीं छूटी है जहाँ मेरी कविताएँ न छपी हो; समझी! मनोरम ने बहुत ही प्रसन्न चित्त हो कर बताया।

अच्छा! बताओ तुम बहादुर सिंह को जानती हो? मनोरम ने पूछा।

कौन बहादुर सिंह? मैं किसी बहादुर–वहादुर सिंह को नहीं जानती। मेरे रिश्तेदार थोड़ी न है; जिनको जानने का ठेका ले रखी हूँ। अनुराधा अपनी भौहें ऊँची करती हुई बोली।

अरे! ये क्या हमारे कॉलोनी के बाहर छोटी वाली गली में रहता है। मनोरम आश्चर्य से बोला।

रहता होगा मुझे क्या; आप क्यों पूछ रहे हैं बहादुर सिंह के बारे में? अनुराधा बोली।

फिर तुम पंडित सुंदरलाल शर्मा जी, महादेवी

वर्मा जी और दिनकर जी को क्यों और कैसे जानती हो; क्या वे तुम्हारे रिश्तेदार थे या पड़ोसी?

ये कैसा सवाल है जी? अनुराधा झल्लाती हुई बोली।

वे तो महान आत्मा थे जिन्होंने हमारे देश के लिए कितना कुछ नहीं किया है, इसके अलावा बहुत ही नामी साहित्यकार भी थे। उन्हीं की कविताएँ और कहानियाँ पढ़ कर हम बड़े हुए हैं और आप जो कहानियाँ पोस्ट करके लाइक कमेंट्स चेक करते हो न; इन्हीं की पुस्तकें पढ़ कर प्रेरणा मिली होगी आपको।

समझे! पतिदेव।

मनोरम मुस्कुराते हुए बोला शायद **"दिमाग की बत्ती जल गई"।**

हाँ! ठीक ऐसे ही बहादुर जैसे कितने ही मनुष्य इस धरती पर आवागमन करते हैं। अगर ईश्वर ने हमको प्रतिभा दी है तो उसको बाहर लाना ही हमारा कर्तव्य है और शायद मैं मानता हूँ कि ईश्वर के द्वारा प्राप्त तोहफ़े को प्रदर्शित करना ईश्वर का सम्मान करना है। खाना-पीना, घूमना, पैसा कमाना ये तो हर मनुष्य का उद्देश्य है और ज़िम्मेदारी भी। जानवर भले ही पैसे न कमाते हों; लेकिन सुबह-शाम खाने का बंदोबस्त तो करते ही हैं न! और एक दिन ऐसा आता है कि इस देह का अंत हो जाता है। **हम में और जानवरों में क्या अंतर है बता-**

-ओ ज़रा! मनोरम की बातें कुछ अनुराधा के सर के ऊपर से जा रही थी कुछ साँस के साथ अंदर। दुनिया में सिर्फ पैसा कमाना ही एक मात्र उद्देश्य नहीं होता है अनु। तुम अभी बता रही थी कि पड़ोसी बहादुर को नहीं जानती हो अगर वो कुछ अच्छा काम करता तो तुम नहीं जानती क्या?

हम्म! अनु धीमे स्वर में बोली।

मैं एक शासकीय पद में हूँ। साठ साल बाद रिटायर्ड हो जाऊँगा उसके बाद बस इधर-उधर घूमना फिर अंतिम सांस लेना। उसके बाद कॉलोनी वाले और मेरे कुछ साथीगण आ कर कुछ मिनटों तक शोक प्रदर्शित कर तुम्हें सांत्वना देंगे। तुम नहीं जान पाओगी कि **ये घड़ियाली आँसू हैं या शत प्रतिशत उनके अपने आँसू हैं।** कौन जानता है भला?

प्रतिभा ऐसी होती है जिससे कभी रिटायर्ड नहीं होते हैं। "ये जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी" रहती है।

अनुराधा आज मनोरम की किताब को अपने दोनों आँखों से लगाते हुए अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझ रही थी।

- प्रिया देवांगन जी, "प्रियू", राजिम, जिला - गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

कच्चे आम की सीजनल मॉकटेल

सामग्री: कच्चा आम (छिला हुआ और टुकड़ों में कटा) – 1 मध्यम आकार, चीनी – 3 टेबलस्पून (स्वाद अनुसार), काला नमक – ½ छोटा चम्मच, भुना हुआ जीरा पाउडर – ½ छोटा चम्मच, पुदीना पत्ते – 8-10, नींबू का रस – 1 टेबलस्पून, चिल्ड सोडा या स्पार्कलिंग वॉटर – 1 कप, बर्फ के टुकड़े – आवश्यकतानुसार, गार्निश के लिए पुदीना और आम का स्लाइस।

विधि: 1. कच्चे आम को 1 कप पानी में उबालें जब तक वह नरम न हो जाए (लगभग 10–15 मिनट)। ठंडा होने दें।

2. आम का गूदा निकालकर उसमें चीनी, काला नमक, जीरा पाउडर, नींबू रस और पुदीने की पत्तियाँ डालकर मिक्सी में अच्छी तरह ब्लेंड कर लें।

3. मिश्रण को छान लें (अगर ज़रूरी हो) और ठंडा होने के लिए फ्रिज में रखें।

4. एक लंबे गिलास में बर्फ डालें, फिर उसमें 3–4 चम्मच आम का मिश्रण डालें।

5. ऊपर से ठंडा सोडा या स्पार्कलिंग वॉटर डालें।

6. धीरे-धीरे चलाएं और ऊपर से पुदीना व आम के स्लाइस से सजाएं।

अगर आप तीखा पसंद करते हैं तो एक चुटकी लाल मिर्च पाउडर या थोड़ा अदरक भी मिक्स कर सकते हैं।

- शेफ विशाल चावरे जी, नागपुर (महाराष्ट्र)

घरेलू नुस्खे- स्वादिष्ट सब्जियाँ: खुशबू, रंग और स्वाद का जादू

1. खटाई सही समय पर डालें: अगर सब्जी में खटाई (जैसे – टमाटर, इमली या नींबू) डालनी हो, तो इसे सब्जी के लगभग पक जाने के बाद ही मिलाएं। खटाई पहले डालने से सब्जी को पकने में अधिक समय लगता है।

2. सब्जियों का रंग बनाए रखें:सब्जियाँ उबालते समय यदि पानी में थोड़ा-सा नमक डाल दिया जाए, तो उनका रंग नहीं बदलता और वे स्वाद में तो अच्छी होती ही हैं, दिखने में भी ताजगी भरी लगती हैं।

3. रंग बनाए रखने के लिए चीनी: अगर सब्जी का नैचुरल रंग पकाने के बाद भी बरकरार रखना है, तो पकाते समय उसमें थोड़ी सी चीनी मिला दें।

4. तली हुई चीज़ों का स्वाद बढ़ाएँ: कोई चीज़ तलने से पहले तेल या घी में सफेद सिरके की कुछ बूंदें मिला दें। इससे डिश का रंग और स्वाद दोनों बेहतर हो जाते हैं।

5. ग्रेवी को बनाए खास: स्वादिष्ट और रिच ग्रेवी के लिए अदरक, पोस्ता (खसखस) और कुछ भुने बादाम को पीसकर एक पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को पहले अच्छी तरह भूनें और फिर सब्जी में मिलाएं।

6. जली हुई सब्जी का उपाय: अगर सब्जी गलती से जल गई हो, तो उसमें 2 चम्मच ताज़ा दही डालकर हल्के हाथ से मिलाएं। इससे जले का स्वाद खत्म हो जाएगा।

7. सब्जी में खुशबू के लिए देसी घी का तड़का: अगर आप सब्जी में देसी स्वाद और खुशबू चाहते हैं, तो अंत में थोड़ा देसी घी गरम करके उसमें हींग और जीरे का तड़का लगाएं। इससे सब्जी में जायका और सुगंध बढ़ जाएगी।

8. हरी सब्जियाँ कुरकुरी और ताज़ी बनाएँ: हरी सब्जियाँ जैसे भिंडी, पत्तागोभी या शिमला मिर्च बनाते समय ढक्कन बंद न करें। खुली आंच पर पकाने से ये कुरकुरी, रंगीन और स्वाद में बेहतरीन बनती हैं।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

स्वभाव
भी इंसान की
अपनी कमाई
हुई सबसे
बड़ी दौलत है...!

जिंदगी का आनंद, अपने
तरीके से ही लेना
चाहिए.. लोगों की खुशी
के चक्कर में तो, शेर को
भी सर्कस में- नाचना
पड़ता है...!

कितना भी किसी से
दूर हों, मगर
अच्छे स्वभाव के कारण
आप किसी न किसी
पल यादों में आ ही
जाते हो...!

दिमाग को खूब पढ़ाना
लेकिन दिल को हमेशा
अनपढ़ ही रखना... ताकि
यह 'भावनाओं' को
समझने में हिसाब-
किताब न करे...!

जुबान
सबके पास होती है,
लेकिन 'बात' और
'बकवास' में
फर्क होता है...!

हम अपने व्यक्तित्व
का निर्माण, किसी अन्य
के अवसरों एवं आजादी
को छीनकर नहीं कर
सकते...!

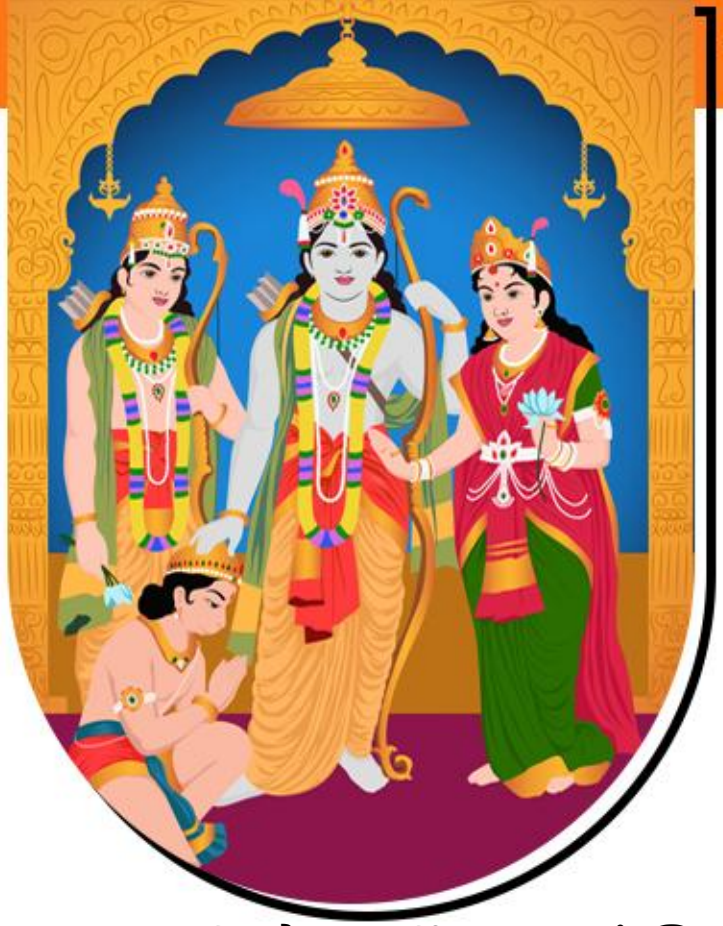

60. भरत ने चौदह वर्षों तक कहां निवास किया...?

- भगवान श्रीराम के वनवास से वापस आने तक भरत ने राजसी पोशाक व शाही जीवन त्याग कर मुनि वेश धारण किया और फल-मूल का भोजन करते हुए नगर के बाहर, नंदीग्राम में निवास किया।

61. भरत ने भगवान श्रीराम से एक वादा भी लिया...?

- कि पन्द्रहवें वर्ष के पहले दिन मुझे अयोध्या में आपके दर्शन सुलभ हो।

62. इस वादे के साथ ही भरत ने क्या प्रतिज्ञा ली...?

- कि अगर पन्द्रहवे वर्ष के पहले दिन मुझे आपके दर्शन न हुए तो मैं जलती हुई अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा।

.....(इस प्रसंग के साथ ही तुलसीकृत रामचरितमानस का अयोध्या काण्ड समाप्त हो जाता है। जबकि वाल्मीकि कृत रामायण में अयोध्या काण्ड महर्षि अत्रि से मुलाकात के पश्चात समाप्त होता है)

63. चित्रकूट से भगवान श्रीराम कहां गये...?

- महर्षि अत्रि के आश्रम पर पहुंचे।

64. अनसूया कौन थी...?

- महर्षि अत्रि की पत्नी। अनसूया एक धर्मपरायणा, तपस्विनी और विदुषी महिला थी।

65. तपस्विनी अनुसूया ने माता सीता को कौन सा उपदेश दिया...?

- पतिव्रता स्त्री के धर्म को बतलाया।

66. अनुसूया ने माता सीता को क्या उपहार दिया...?

- दिव्य हार, वस्त्र, आभूषण व अंगराग प्रदान किये जो नित्य नये, निर्मल और सुहावने बने रहते थे।

67. महर्षि अत्रि के आश्रम से विदा लेकर भगवान श्रीराम ने कहा गमन किया...?

- दंडकारण्य वन में।

(महर्षि अत्रि के प्रसंग के साथ ही महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण का अयोध्या काण्ड समाप्त होता है। **अगला काण्ड है अरण्य काण्ड**)

68. जयंत कौन था...?

- देवराज इंद्र का पुत्र।

69. भगवान श्रीराम ने उसे दंडित क्यों किया...?

- एक बार जब भगवान श्रीराम सीता माता के साथ बैठे थे तब भगवान श्रीराम के बल की परीक्षा करने के लिये जयंत ने काक रूप धारण कर, अपनी चोंच से सीता माता के चरण को घायल कर दिया। उसके इस अपराध का दंड देने के लिये भगवान ने उस पर बाण संधान किया।

70. जयंत ने अपनी रक्षा कैसे की...?

- भगवान श्रीराम का दोषी जानकर, देवराज इन्द्र सहित समस्त त्रिलोकी में किसी ने भी उसको शरण नहीं दी। तब देवर्षि नारदजी ने उसे भगवान श्रीराम की शरण में जाने को कहा। "हे शरणागत के हितकारी...! मेरी रक्षा करें", स्तुति करते हुए जयंत ने भगवान श्रीराम की शरण ली।

71. भगवान श्रीराम ने उसको क्या दंड दिया...?

- उसको एक आंख से काना करके छोड़ दिया।

(जयंत का प्रसंग केवल तुलसीकृत रामचरितमानस में है, वाल्मीकि कृत रामायण में इसका कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन वाल्मीकि कृत रामायण के सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी को अपनी चूड़ामणि देते समय सीता माता, निशानी के तौर पर इस घटना का उल्लेख करती है)

72. दंडकारण्य में प्रवेश करते ही किस राक्षस ने आक्रमण किया...?

- विराध नामक राक्षस ने। जो कि पूर्व जन्म में तुम्बुरु नामक गंधर्व था लेकिन कुबेर के श्राप कारण उसे राक्षस शरीर में आना पड़ा। भगवान श्रीराम के हाथों वध होने से उसे राक्षस योनि से मुक्ति प्राप्त हुई।

73. पंचवटी जाने से पहले भगवान श्रीराम की किन-किन प्रमुख ऋषियों से मुलाकात हुई...?

- दण्डकारण्य में अनेक मुनि अपना आश्रम बना कर तपस्या करते थे उनमें से प्रमुख थे शरभंग मुनि, सुतीक्ष्ण मुनि, अगस्त्य मुनि।

(क्रमशः... अगले माह)

- माणक चंद सुथार जी, बीकानेर (राज.)

जीवन में सफलता के लिए धैर्य बहुत जरूरी

बचपन और विद्यार्थी जीवन परीक्षा के असल मुकाम है जब उसे कसौटी बड़ी सख्ती से कसती है। यही वह समय होता है जो भविष्य तय करता है।

धैर्य के साथ कठिन परिस्थितियों का मुकाबला साहस और संतुष्टि ही नहीं सफलता भी प्रदान करता है।

यह एक परीक्षा है, जिसमें व्यक्ति को समय, सहनशीलता और आत्मविश्वास के साथ खरा उतरना होता है। विशेष रूप से विद्यार्थी जीवन में धैर्य का पर्याय है क्योंकि पढ़ाई, परीक्षा, और भविष्य निर्माण से जुड़ी चुनौतियां उसकी अक्सर उसे परखती है।

असफल विद्यार्थी इसे जीवन की हार समझ लेते हैं। वे हतोत्साह में आत्मघाती कदम उठा लेते हैं, जो न केवल उनकी अपार संभावनाओं का अंत करता है बल्कि उनके परिवार और समाज को भी गहन वेदना ग्रस्त कर देता है।

जीवन में सफलता का मुल असफलता से शुरू होता है तो समझना गलत नहीं होता कि परीक्षा भले ही कड़ी हो पर परिणाम भी उतना ही उज्जवल ही होगा। **हार जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है।** सफलता और असफलता दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू है, ये जीवन की अभिन्न अनिवार्यता भी हैं।

असफलता का दौर कमजोरियों को पहचान कर उनमें सुधारने का अवसर प्रदान करता है। इस समय जीवन का मोल समझने का मौका होता है क्योंकि संबल का दूसरा नाम ही सफलता है। जीवन में सफलता -असफलता का चक्र चलता रहता है और हर कठिनाई के बाद सफलता अवश्य मिलती है। ऐसे में धैर्य और मेहनत से ही तय लक्ष्य हासिल किये जा सकते है।

अगर इतिहास उठा कर देखें तो विवेकानंद जी से लेकर रामानुजाचार्य, जगदीश चन्द्र बसु जैसे महान लोगों ने भी प्रारंभ में कई असफलताओं का सामना किया, लेकिन

भी ख़ासा योगदान होता है।

उन्होंने धैर्य और संबल से हार नहीं मानी और वे विद्यार्थियों और समाज के लिए एक मिसाल बने।

आज जरूरत असफलता को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने की है। धैर्य, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है।

- अमृतलाल मारू जी, 'रवि' (स्वतंत्र लेखक), इंदौर (म. प्र.)

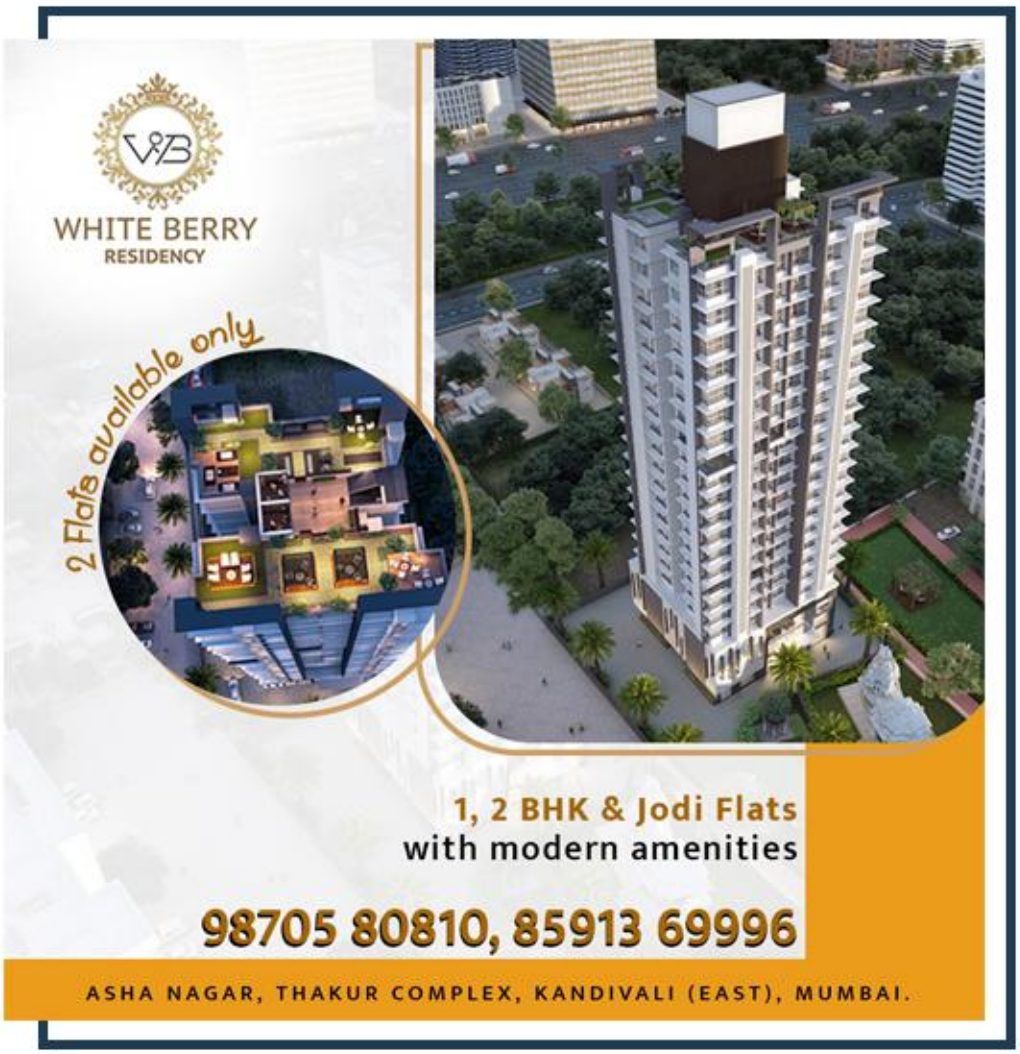

दुनिया में कोई भी डॉक्टर उन टांगों का इलाज नहीं कर सकता है जो दूसरों के मामले में आड़ाई जाती है...!

गोलू: पंडित जी, कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे किस्मत चमक जाए!
पंडित: बेटा, सुबह जल्दी उठकर मेहनत करो।
गोलू: और कोई आसान उपाय...?

सासु मां : शादी से पहले मायके से खाना बनाना सीखकर नहीं आ सकती थी?
लड़की : ओह प्लीज... वो मेरा मायका था, कोई होटल मैनेजमेंट का स्कूल नहीं!

टीचर - एक साल में कितनी रातें होती है?
छात्र दस !
टीचर - वो कैसे ?
छात्र - एक शिवरात्रि और नौ दिन नवरात्रि...!

इंग्लिश मुझे शुरू से ही समझ नहीं आयी... जब T से काम चल सकता था तो ea घुसेड़ने की क्या जरूरत थी Tea की स्पेलिंग में...!

पढ़ाई ऐसी होनी चाहिए कि टीचर भी कहे –
'बेटा अब रहने दे, तू मुझसे आगे निकल गया...!

अहंकार एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति को अपनी श्रेष्ठता का अनुभव कराती है और दूसरों से खुद को ऊँचा दिखाने के लिए उसे हर कदम पर प्रेरित करती है। यह ऐसा भाव है, जो किसी भी व्यक्ति को अपनी कमजोरी को छिपाने और अपनी छवि को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। हालांकि, अहंकार का परिणाम न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि समाज में भी गहरे नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यह प्रवृत्ति व्यक्ति को अपने विवेक और नैतिकता से विमुख कर सकती है और उसे एक असंतुलित मानसिकता की ओर प्रवृत्त कर सकती है।

अहंकार का पहला और प्रमुख शस्त्र आक्रोश होता है। यह वह प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति को अपने स्वामी, राजा या किसी भी उच्च स्थान पर बैठे व्यक्ति के खिलाफ बोलने से रोकता है। यदि हम गौर करें, तो यह आक्रोश चारण कवि की तरह होता है, जो कभी भी अपने स्वामी या राजा के दोषों को उजागर नहीं कर सकता। यह प्रवृत्ति उसी प्रकार है, जैसे एक अहंकारी व्यक्ति अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए किसी भी तरीके का सहारा लेता है, चाहे वह कुटनीति, धोखाधड़ी या किसी अन्य हथकंडे का प्रयोग हो।

अहंकार के कारण व्यक्ति में समानता की भावना और न्याय की अवधारणा कमजोर हो जाती है। ऐसे व्यक्ति के लिए अपने लाभ और अपने अहंकार को बचाने के अलावा किसी और चीज़ का कोई महत्व नहीं होता। वह अपने विवेक और नैतिकता की उपेक्षा करता है और धर्म, ईमान, मानवता जैसी बुनियादी मानवीय विशेषताओं को भी दांव पर लगा देता है, ताकि वह स्वयं को निर्दोष और श्रेष्ठ साबित कर सके। इससे समाज में असामाजिक व्यवहार और वैमनस्यता उत्पन्न हो सकती है, जो अंततः समाज के सामान्य जीवन को प्रभावित करती है।

अहंकार से ग्रस्त व्यक्ति की विशेषता यह होती है कि जब उसकी स्थिति कमजोर पड़ने लगती है, तो वह निराधार आरोपों का सहारा लेता है।

वह तथ्यों और तर्कों को त्यागकर, सामने वाले पर ऐसे आरोप लगाता है जिनका उस स्थिति से कोई संबंध नहीं होता। इसका उद्देश्य सामने वाले को मौन करना और अपनी स्थिति को फिर से सुदृढ़ करना होता है। हालांकि, यह एक अस्थायी रणनीति होती है, जो व्यक्ति को तत्कालिक सफलता तो दिला सकती है, लेकिन यह दीर्घकालिक रूप से उसे मानसिक शांति और सम्मान नहीं देती।

आक्रोश और अहंकार की इस मानसिकता का प्रभाव केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं होता है, बल्कि यह पूरे समाज पर प्रभाव डाल सकता है। अहंकार में लिप्त व्यक्ति न केवल अपने और दूसरों के रिश्तों में दरार डालता है, बल्कि समाज के लिए भी एक विकृत उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह व्यक्ति के मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। यदि कोई व्यक्ति अपने अहंकार के कारण बार-बार गलत निर्णय लेता है या समाज की भलाई की ओर कदम नहीं बढ़ाता, तो यह स्थिति समाज में अशांति और असंतुलन का कारण बन सकती है।

हमने अक्सर देखा है कि अहंकारी व्यक्ति, अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए सत्य और न्याय की उपेक्षा कर देता है। वह केवल अपने स्वार्थ और खुद को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश करता है। इसके परिणामस्वरूप, वह समाज में मानवाधिकारों और समाजवादी मूल्यों को नुकसान पहुँचाता है। इस प्रकार का **अहंकार, जो दूसरों को नीचा दिखाने और स्वयं को ऊँचा रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है, समाज में एक नकारात्मक प्रवृत्ति को जन्म देता है।**

अहंकार से मिलने वाली तात्कालिक सफलता व्यक्ति को एक समय के लिए प्रोत्साहित कर सकती है, लेकिन यह केवल भ्रम होता है। व्यक्ति का अहंकार उसे संगत निर्णय लेने से रोकता है, जिससे उसे दीर्घकालिक मानसिक संतोष नहीं मिलता। इस प्रकार का अहंकार व्यक्ति को मानसिक असुरक्षा और अकेलेपन की ओर ले जा सकता है। इसके विपरीत, जब व्यक्ति आत्म-स्वीकृति और विनम्रता से काम करता है, तो वह न केवल अपने जीवन में मानसिक शांति प्राप्त करता है, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अंततः, यह स्पष्ट होता है कि अहंकार एक द्वार हो सकता है, जो व्यक्ति को समाज में अपने स्वार्थ को स्थापित करने की ओर प्रेरित करता है, लेकिन यह उस व्यक्ति को खुद के साथ और दूसरों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने में नाकामयाब करता है।

अहंकार और आक्रोश की प्रवृत्तियाँ न केवल व्यक्ति के लिए हानिकारक हैं, बल्कि समाज के लिए भी खतरनाक हो सकती हैं। यदि समाज को सही दिशा में आगे बढ़ाना है, तो हमें अहंकार को नियंत्रित करने, आत्म-निरीक्षण करने और समाज के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है। **अतः अहंकार केवल एक मानसिक अवबोधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व की उस विकृति को दर्शाता है, जो समाज के लिए हानिकारक साबित हो सकती है।** इसके प्रभाव को समझकर और इसे नियंत्रित करके हम अपने और समाज के संबंधों को स्वस्थ और मजबूत बना सकते हैं। इसलिए, **हमें अहंकार से उबरने के लिए आत्म-नियंत्रण, विनम्रता और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को विकसित करना होगा।**

- **सुशील कुमार जी, हबीबपुर, बाबागंज - बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)**

IT'S TIME FOR CREATIVITY

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

Marketing

- Social Media Marketing
- Google Ads
- Performance Marketing
- Email Marketing
- Whatsapp Marketing
- Ecommerce Marketing

Designing

- Website Design
- Graphic Design
- Print Media Design
- Stationery Design
- Website Development
- Content Writing

www.mxcreativity.com | 8080518745 | info@mxcreativity.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

चुप हैं वादियाँ, रोया आसमान,
खामोश बहते हैं लहू में अरमान।
धरती माँ ने खोले अपने निष्कलुष हाथ,
शहीदों को रख लिया चिर विश्रांति के साथ।
पहलगाम की माटी भीगी अश्रुधार,
माँ की गोद बनी अब उनका अंतिम संसार।